26-04-2023

भारत की पहली वॉटर मेट्रो

समाचार पत्रों में क्यों?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोच्चि, केरल में देश की पहली वॉटर मेट्रो सेवा का उद्घाटन किया। इसके तहत कोच्चि व आसपास के 10 द्वीपों पर लोगों का सफ़र सुगम होगा।

त्वरित मुद्दा?

- इस अवसर पर पीएम मोदी के साथ केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन भी मौजूद थे। इस सेवा के शुरू होने से कोच्चि में व उसके आस-पास के क्षेत्रों में प्रदुषण से भी आजादी मिलेगी।
- पीएम मोदी ने राज्य में विभिन्न विकास परियोजनाओं की आधारशिला रखी और वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन को भी हरी झंडी दिखाई साथ ही कुछ नई सुविधाओं का उद्घाटन भी किया।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- भारत में इस तरह की सुविधा का पहली बार संचालन किया जा रहा है। जो देश के पर्यटन को भी बढ़ावा देगा साथ ही पर्यटकों को भी आकर्षित करेगा।
- इस मेट्रो सुविधा में बैटरी से संचालित वातानुकूलित इलेक्ट्रिक हाइब्रिड बोट के सफ़र का आनंद उठाया जा सकता है
- यह वॉटर मेट्रो प्रोजेक्ट केरल सरकार और जर्मन एजेंसी KFW की फंडिंग से शुरू किया गया है. जिसमें केरल सरकार ने 100 करोड़ रुपये इन्वेस्ट किये है
- इसका पहला रूट हाई कोर्ट-वायपिन है जिस पर 26 अप्रैल सुबह 7 बजे से संचालन किया शुरू हो गया है इसका दूसरा रूट वायटिला-कक्कनाड टर्मिनल है जिस पर 27 अप्रैल की सुबह 7 बजे से परिचालन शुरू किया जायेगा
- इसके पहले रूट के लिए 20 रुपये और दूसरे रूट के लिए 30 रूपये किराया निर्धारित किया गया है. इनका संचालन हर 15 मिनट के अन्तराल पर किया जायेगा
- इस तरह की सेवा के संचालन से जलमार्ग के विकास को भी बढ़ावा मिल रहा है. साथ ही प्रदूषण और ट्रैफिक से भी लोगों को निजात मिलेगी. साथ ही एनर्जी एफिशिएंसी के क्षेत्र में भी भारत आत्मनिर्भरता हासिल करेगा
- इस सुविधा के बेहतर संचालन के लिए आस-पास के सड़क मार्गो का भी विकास किया जा रहा है, जिससे लोगों को वॉटर मेट्रो तक पहुँचने में आसानी हो. इस सुविधा से स्थानीय लोगों को रोजगार भी मिलेगा
- पीएम मोदी ने केरल की पहली वंदे भारत एक्सप्रेस को भी हरी झंडी दिखा कर रवाना किया. इसका संचालन तिरुवनंतपुरम और कासरगोड के बीच किया जायेगा यह राज्य के 11 ज़िलों को कवर करेगी। गौरतलब है कि यह देश की 16वीं वंदे भारत एक्सप्रेस है

- पीएम ने केरल में देश के पहले डिजिटल साइंस पार्क का शिलान्यास भी किया। जिसके निर्माण में Rs.1,515 करोड़ रुपये खर्च किये जा रहे है यह साइंस पार्क आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डेटा एनालिटिक्स और साइबर सुरक्षा पर आधारित संस्थानों को सुविधा प्रदान करेगा
- पीएम मोदी ने दादरा एवं नगर हवेली और दमन व दीव भी पहुंचे जहां उन्होंने सिलवासा में नमो मेडिकल एजुकेशन ऐंड रिसर्च इंस्टीट्यूट का उद्घाटन किया यह इंस्टीट्यूट Rs. 203 करोड़ की लागत से तैयार किया गया है
- ह इस क्षेत्र का पहला मेडिकल कॉलेज है. इसके अतिरिक्त पीएम मोदी ने Rs.4,850 करोड़ से अधिक की 96 परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास भी किया

जल स्रोत गणना

समाचार पत्रों में क्यों?

हाल ही में, जल शक्ति मंत्रालय द्वारा भारत में पहली बार जल स्रोतों की गणना की गयी।

त्वरित मुद्दा?

- जल शक्ति मंत्रालय, राष्ट्रीय संसाधन के रूप में जल के विकास, संरक्षण और प्रबंधन के लिए नीतिगत दिशानिर्देश और साथ ही कार्यक्रम निर्धारित करने के लिए जिम्मेदार नोडल मंत्रालय है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- यह गणना सभी जल स्रोतों के एक समग्र राष्ट्रीय डेटाबेस तैयार करने के क्रम में छठी लघु सिंचाई गणना के अनुरूप केंद्र प्रायोजित योजना "सिंचाई गणना" के तहत की गई।
- इसमें जलाशयों के प्रकार, उनकी स्थिति, अतिक्रमण की स्थिति, उपयोग, भण्डारण क्षमता, भण्डारण भरने की स्थिति आदि सहित सभी महत्वपूर्ण पहलुओं पर जानकारी एकत्र की गई है।

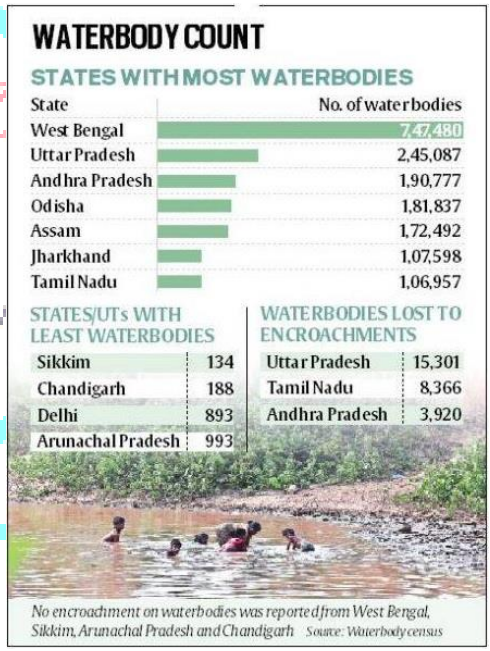

- यह गणना भारत के जल संसाधनों की एक व्यापक सूची प्रदान करती है, जिसमें प्राकृतिक और मानव निर्मित जल स्रोत जैसे तालाब, टैंक, झील आदि के साथ-साथ जल स्रोतों पर अतिक्रमण से जुड़ा डेटा भी शामिल है।
- इसमें ग्रामीण के साथ-साथ शहरी क्षेत्रों में स्थित उन सभी जल निकायों को शामिल किया जो उपयोग में हैं या उपयोग में नहीं हैं।
- गणना में जल स्रोतों के सभी प्रकार के उपयोगों जैसे सिंचाई, उद्योग, मत्स्यपालन, घरेलू/पेयजल, मनोरंजन, धार्मिक, भूजल पुनर्भरण आदि को भी ध्यान में रखा गया है।
- इस गणना में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच असमानताओं और अतिक्रमण के विभिन्न स्तरों पर भी प्रकाश डाला गया है।

- पूरे देश में 24,24,540 जल स्रोतों की गणना की गई है, जिनमें से 97.1% (23,55,055) ग्रामीण क्षेत्रों में हैं और केवल 2.9% (69,485) ही शहरी क्षेत्रों में हैं।

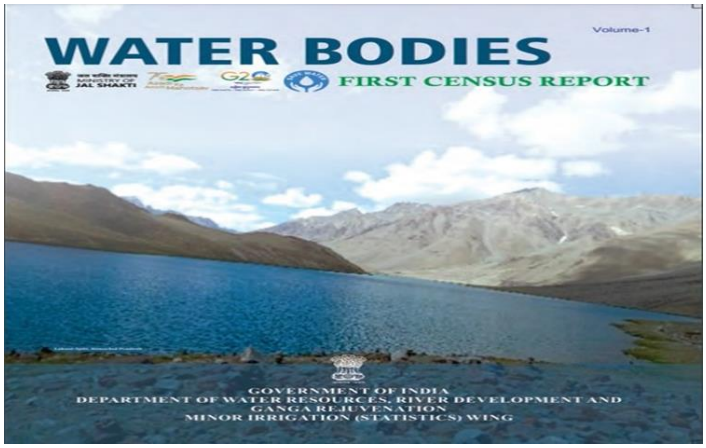

- जल स्रोतों की संख्या के मामले में शीर्ष 5 राज्य पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, ओडिशा और असम हैं जहां देश के कुल जल स्रोतों का लगभग 63% हैं।
- शहरी क्षेत्रों में जल स्रोतों की संख्या के मामले में शीर्ष 5 राज्य पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरल, उत्तर प्रदेश और त्रिपुरा हैं
- ग्रामीण क्षेत्रों में जल स्रोतों की संख्या के मामले में शीर्ष 5 राज्य पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, ओडिशा और असम हैं।
- कुल जल स्रोतों में से 59.5 प्रतिशत जल स्रोत तालाब हैं, इसके बाद टैंक (15.7%), जलाशय (12.1%), जल संरक्षण योजनाएं / रिसाव टैंक / रोक बंध (9.3%), झीलें (0.9%) और अन्य (2.5%) हैं।
- गणना के अनुसार, 55.2% जल स्रोतों का स्वामित्व निजी संस्थाओं के पास है जबकि 44.8% जल स्रोतों का स्वामित्व सार्वजनिक क्षेत्र के पास है।
- निजी स्वामित्व वाले जल स्रोतों में शीर्ष 5 राज्य पश्चिम बंगाल, असम, आंध्र प्रदेश, ओडिशा और झारखंड हैं।
- उपयोग हो रहे जल स्रोतों में से, सर्वाधिक जल स्रोतों को सिंचाई कार्यों के लिए उपयोग में लाया जाता है उसके बाद जल स्रोतों का सर्वाधिक उपयोग मत्स्य पालन के लिए किया जाता है।
- गणना के अनुसार कुल जल स्रोतों में से 78% जल स्रोत मानव निर्मित जबकि 22% प्राकृतिक जल स्रोत हैं।
- कुल जल स्रोतों में से 1.6% (38,496) जल स्रोतों का अतिक्रमण किया जा चुका है, जिनमें से 95.4% ग्रामीण क्षेत्रों में और शेष 4.6% शहरी क्षेत्रों में हैं।
- कुल जल स्रोतों में से, 72.4% जल स्रोतों का जल विस्तार क्षेत्र 0.5 हेक्टेयर से कम तथा 13.4% जल स्रोतों का जल विस्तार क्षेत्र 0.5-1 हेक्टेयर के बीच, 11.1% जल स्रोतों का जल विस्तार क्षेत्र 1-5 हेक्टेयर के बीच और शेष 3.1% जल स्रोतों का जल विस्तार क्षेत्र 5 हेक्टेयर से अधिक है।

न्यूज फटाफट

त्रिशूर पूरम उत्सव (THRISSUR POORAM FESTIVAL)

- यह केरल में मलयालम माह मेदोम (अप्रैल-मई) के दौरान मनाया जाने वाला उत्सव है।
- पूरम में त्रिशूर और इसके आसपास के दस मंदिर शामिल होते हैं तथा त्रिशूर पूरम को अन्य सभी त्योहारों से ऊपर माना जाता है। इसकी शुरुआत कोचीन के महाराजा राम वर्मा (1790-1805) ने की थी।
- यह उत्सव वडक्कुनाथन मंदिर पर केंद्रित है जहाँ भगवान शिव को श्रद्धा अर्पित करने के लिये जुलूस भेजा जाता है।
- चेंदा मेलम और पंच वद्यम संगीत के साथ मंदिर के प्रांगण में एक विशाल परेड का आयोजन किया जाता है।

पुथंडु (PUTHANDU)

- तमिल कैलेंडर के अनुसार चिथिराई माह के पहले दिन को पुथंडु कहा जाता है, जिसे तमिल नव वर्ष के रूप में जाना जाता है। यह उत्सव ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार 14 अप्रैल को मनाया जाता है। पुथंडु का उद्भव चोल शासनकाल से माना जाता है।
- यह तमिलनाडु के साथ-साथ श्रीलंका और मलेशिया के कुछ क्षेत्रों में पारंपरिक समारोहों, दावतों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ मनाया जाता है। मान्यता के अनुसार, इस दिन भगवान ब्रह्मा ने ब्रह्मांड का निर्माण शुरू किया था और भगवान इंद्र शांति सुनिश्चित करने के लिये पृथ्वी पर आए थे।
- इस दिन तमिल लोग नववर्ष की शुभकामनाओं को पुत्तु वट्टुका या इया पुत्तु नलवत्तुका कहते हैं। •तमिलनाडु में मंगई पचड़ी नामक व्यंजन बनाया जाता है जिसका सेवन जीवन में सद्भावना और संतुलन का प्रतीक माना जाता है।
- इस दिन मदुरै के मीनाक्षी मंदिर में चित्तिरई थिरुविज़ा मनाया जाता है जो देवी मीनाक्षी और भगवान सुंदरेश्वर के राज्याभिषेक का एक जश्न है।

साइकस पेक्टिनाटा (CYCAS PECTINATA)

- साइकस पेक्टिनाटा साइकाडेसी (Cycadaceae) परिवार से संबंधित एक सदाबहार व ताड़ जैसा वृक्ष है। इसमें परागण द्वारा खुली हवा में अनिषेचित बीजों का प्रत्यक्ष निषेचन होता है।
- यह सबसे प्राचीन जिम्नोस्पर्म में से एक हैं जो संभवतः 300-325 मिलियन वर्ष पहले कार्बोनिफेरस काल (Carboniferous Period) के अंत में उत्पन्न हुए और जुरासिक-क्रेटेशियस काल (Jurassic-Cretaceous Period) के दौरान सबसे अधिक विविधता तक पहुंच गए।
- यह अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (IUCN) की लाल सूची में सुभेद्य (Vulnerable) के रूप में सूचीबद्ध है।
- साइकस पेक्टिनाटा में निहित आनुवंशिक जानकारी इसे वैज्ञानिक अनुसंधान और संरक्षण के लिये मूल्यवान बनाती है।
- हालिया अध्ययन से पता चला है कि हिमालयी देशों में साइकस पेक्टिनाटा के अस्तित्व को एक सजावटी पौधे के रूप में संग्रह करने और निवास स्थान के विनाश से अत्यधिक खतरा है।

बरनवापारा वन्यजीव अभयारण्य (BARNAWAPARA WILDLIFE SANCTUARY)

- यह अभयारण्य छत्तीसगढ़ के रायपुर ज़िले में स्थित है। यहाँ पाई जाने वाली वनस्पतियों में सागवान, साल और मिश्रित वन प्रमुख हैं।
- इस अभयारण्य की जीवनरेखा के रूप में तीन नदियाँ- बालमेढ़ी, जोंक और महानदी इसके आस-पास बहती हैं। बालमेढ़ी इसकी पश्चिमी सीमा बनाती है, जबकि जोंक उत्तर-पूर्वी सीमा पर बहती है।
- इसके भीतर बालार जलाशय स्थित है जो आर्द्रभूमि के रूप में पक्षियों और मछलियों को आश्रय प्रदान करता है।
- यहाँ चीतल, सांभर, नीलगाय, जंगली सूअर, स्लोथ बियर और जंगली कुत्ते पाए जाते हैं। छत्तीसगढ़ वन विभाग ने कुछ जंगली भैंसों को असम से इस अभयारण्य में स्थानांतरित किया है।

एपस्टीन-बार वायरस (EPSTEIN-BARR VIRUS)

- एपस्टीन-बार वायरस (EBV) हर्पीस वायरस परिवार का एक सदस्य है जिसे मानव हर्पीसवायरस 4 के रूप में भी जाना जाता है।

- यह आमतौर पर शारीरिक तरल पदार्थों, विशेषतः लार के माध्यम से फैलता है। इसके लक्षणों में थकान, बुखार, गले में सूजन, प्लीहा का बढ़ना, यकृत में सूजन और दाने निकलना शामिल हैं।
- यह वायरस मोनोन्यूक्लिओसिस और अन्य बीमारियाँ पैदा कर सकता है।
- वर्तमान में एपस्टीन-बार वायरस संक्रमण से बचाव के लिये कोई टीका उपलब्ध नहीं है।
- यह सबसे आम मानव वायरस में से एक है। एक हालिया अध्ययन के अनुसार एपस्टीन-बार वायरस कैंसर के रूप में विकसित हो सकता है।

KAUTILYA ACADEMY INDORE